International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 620-621

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 620-621
www.allresearchjournal.com
Received: 26-09-2015
Accepted: 30-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना का उद्‌भव और विकास

डॉ. शिवदत्त शर्मा

साहित्य में आलोचना का महत्व सर्वाधिक है। आलोचना से साहित्य प्रांजल तो होता ही है साथ ही रचना की गुणवत्ता का भी मूल्यांकन हो जाता है।आलोचना कई प्रकार की होती है। पाश्चात्य एवं भारतीय मत के अनुसार आलोचना के कई रूप हैं।भारतीय मत के अनुसार तुलनात्मक आलोचना सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। वैसे तो व्याख्यात्मक आलोचना ही किसी रचना के सौंदर्य का सही मूल्यांकन कर सकती है, परन्तु व्याख्यात्मक आलोचना में जब दो रचनाओं की परस्पर तुलना करके उनमें से एक को दूसरी की तुलना में श्रेष्ठतर सिद्ध किया जाता है ,तब वह तुलनात्मक आलोचना कहलाती है।1

अर्थ एवं स्वरूप

दो रचनाओं के परस्पर तुलनात्मक मूल्यांकन को ही तुलनात्मक आलोचना कहा जांता है।यह तुलना किसी एक ही रचनाकार की दो कृतियों की या दो भिन्न कवियों की भिन्न–भिन्न रचनाओं की हो सकती है। तुलनात्मक आलोचना वस्तुतः व्याख्यात्मक आलोचना का ही एक भाग है। व्याख्यात्मक आलोचना और तुलनात्मक आलोचना में यही अन्तर है कि व्याख्यात्मक आलोचना में किसी एक रचना की व्याख्या पर विशेष बल दिया जाता है,जबकि तुलनात्मक आलोचना में दोनो रचनाओं की व्याख्या कर उनकी परस्पर तुलना पर विशेष बल दिया जाता है। तुलनात्मक आलोचना के लिए आलोच्य रचनाओं में विषयवस्तु, भावव्यंजना ,शैली एवं शिल्प आदि किसी एक तत्व में समानता होनी आवश्यक है। जैसे– तुलसी और सूरदास के काव्य की भक्ति के आधार पर की जा सकती है क्योंकि दोनों कवियों का मुख्य विषय भक्ति ही है।इसी प्रकार छायावादी दो कवियों प्रसाद और पंत में परस्पर तुलना हो सकती है।2

भारत में तुलनात्मक आलोचना का उदभव और विकास

भारत में तुलनात्मक आलोचना की परम्परा बहुत पुरानी हैं केवल हिन्दी में ही नहीं उससे पूर्व संस्कृत में तुलनात्मक आलोचना का प्रारम्भ हो चुका था।संस्कृत में इस प्रकार की आलोचना के अनेक उदाहरण मिलते हैं। महाकवि भारवि और माघ की दिव्य रचनाओं का तुलनात्मक मूल्यांकन समय समय पर होता रहा है। इसी प्रकार संस्कृत में दो से अधिक कवियों की रचनाओं का भी तुलनात्मक मूल्यांकन होता रहा है। इस का प्रमाण यह श्लोक है–

दण्डिनः पदलालित्यं भारवे त्वर्थगौरवम्।
उपमा कालिदासस्य माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

इसमें स्पष्ट उल्लेख है कि दण्डी का पद–लालित्य, भारवि का अर्थ–गौरव तथा कालिदास की उपमा विख्यात है परन्तु माघ के काव्य में इन तीनों ही गुणों का समावेश मिलता है।इस तरह संस्कृत में तुलनात्मक आलोचना के प्रमाण मिलते हैं।3

हिन्दी में भी इसी तरह तुलनात्मक आलोचना की परम्परा रही है। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य कवि सूरदास एवं तुलसी दास तथा केशव की रचनाओं का किसी विद्वान द्वारा तुलनात्मक विश्लेषण करने वाला एक दोहा स्वयं ही इस तथ्य की पुष्टि कर देता है कि तुलनात्मक आलोचना की परम्परा हिन्दी में भी रही है।

सूर–सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहंतहं करत प्रकाश।।

यह सत्य है कि इस प्रकार के दृष्टान्त से यह प्रमाणित होता है कि अपने आरम्भिक काल में तुलनात्मक आलोचना का इतना विस्तृत स्वरूप नहीं दिखाई देता। ऐसे उदाहरण प्रमाणित करते हैं

कि इस प्रकार के आलोचकों ने तुलनात्मक आलोचना पद्धति में न तो आलोच्य रचना की विषय वस्तु आदि के साम्य का विस्तृत विवेचन किया है और न ही साम्य दर्शाने वाले तत्वों की ही व्याख्यात्मक आलोचना की
है। केवल निष्कर्ष रूप से इनकी तुलनात्मक स्थितियों को स्पष्ट किया है।

हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना

हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना करने का श्रेय पद्म सिंह को दिया जा सकता है। उन्होंने पहली बार बिहारी की रचनाओं में श्रृंगार की अश्लील अभिव्यक्ति के आक्षेप को धोने के लिए सातवाहन कृत गाथासप्तशती तथा गोवर्धनाचार्य कृत आर्यसप्तशती के साथ बिहारी सतसई की तुलना की और यह सिद्ध किया कि बिहारी के दोहों पर इन रचनाओं का प्रभाव है तथा बिहारी ने इन रचनाओं के भावों तथा शैली का अनुकरण किया है। इस तरह उन्होंने प्रथम बार इस तुलनात्मक आलोचना का प्रारम्भ किया। उन्होने एक स्वस्थ एवं प्रौढ तुलनातमक आलोचना पद्धति को अपना कर बिहारी सतसई पर लगे आरोपों से बिहारी को मुक्त किया। इस तरह पद्म सिंह शर्मा द्वारा की गई तुलनात्मक आलोचना से ही हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक आलोचना का प्रारम्भ माना जाना चाहिए।4

इसके उपरान्त हिन्दी साहित्य के आलोचना क्षेत्र में तुलनात्मक आलोचना पद्धति की गति तीव्र हो गई। मिश्र बन्धुओं ने रीति कालीन कवियों देव और बिहारी की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके देव को बिहारी से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास किया। तुलनात्मक पद्धति द्वारा आलोचना के द्वारा बिहारी एवं देव की रचनाओं का सर्वपक्षीय विश्लेषण करके वास्तविकता को सामने लाने का प्रयास किया गया। तुलनात्मक आलोचना पद्धति से कृष्ण बिहारी मिश्र ने जहां देव को बिहारी से श्रेष्ठ कवि स्वीकार किया वहीं लाला भगवान दीन ने पुनः तर्क सहित दोनों कवियों की तुलनात्मक आलोचना पद्धति से इनकी कृतियों का मूल्यांकन करते हुए पुनः बिहारी को देव से श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया।

द्विवेदी युग को तुलनात्मक आलोचना का युग कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। द्विवेदी युग में तुलनात्मक आलोचना का आधार मुख्यतः शास्त्रीय पद्धति ही था। इसी के आधार पर ही किसी कृति के गुण–दोषों की परख की जाती थी। परन्तु आधुनिक युग में शास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर तुलनात्मक आलोचना कम ही दिखाई देती है। वर्तमान समय में दो रचनाओं के साम्य को ध्यान में रख कर तुलनात्मक आलोचना की जाती है तथा उत्तरोत्तर इसका विकास हो रहा है। इतना ही नहीं वर्तमान काल में तो देश–कालातीत रचनाओं, यथा हिन्दी कवि निराला तथा बंगला कवि नजरूल इस्लाम की रचनाओं एवं बंकिमचन्द्र और भारतेन्दु आदि की रचनाओं की भी तुलनात्मक आलोचना एवं मूल्यांकन किया जा रहा है। यही नहीं बंगाल–वैष्णव काव्य परम्परा व हिन्दी का भक्ति–काल, बंगला नाथ साहित्य एवं हिन्दी नाथ–साहित्य बंगला मुस्लिम–काव्य और हिन्दी का सूफी काव्य जैसे विषयों का तुलनात्मक अध्ययन करने की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि वर्तमान काल में हिन्दी जगत में तुलनात्मक आलोचना निरन्तर विकसित हो रही है।

तुलनात्मक आलोचना में आलोचक की भूमिका

तुलनात्मक आलोचना में आलोचक की भूमिका अत्यंन्त महत्वपूर्ण होती है। तुलनात्मक आलोचना शास्त्रीय आलोचना से थोडी भिन्न प्रकार की होती हैं । शास्त्रीय आलोचना में आलोचक तटस्थ रहता है जबकि इस तुलनात्मक आलोचना में आलोचक आलोच्य रचनाओं से अपने मन पर पडे प्रभाव को भी अभिव्यक्त करता है।

बिहारी को श्रेष्ठ प्रमाणित करने में पद्म सिंह शर्मा ने इसी पद्धति का सहारा लेकर श्रृंगार रस निरूपण में बिहारी पर लगे भद्दे धब्बे को धोने का स्तुत्य प्रयास किया। स्वस्थ तुलनात्मक आलोचना के लिए यह भी अत्यंत आवश्यक है कि आलोचक पूर्वाग्रह से ग्रसित न हो। यदि आलोचक पूर्वाग्रह से ग्रसित हो कर किन्हीं दो रचनाओं की तुलनात्मक आलोचना करता है तो वह कदापि निष्पक्ष तुलनात्मक आलोचना नहीं कर पाएगा, क्योंकि पूर्वाग्रह के कारण इसका झुकाव निश्चित ही एक ओर होगा। वह पूर्वाग्रह के कारण अपनी रुचि के अनुसार ही अपने प्रिय कवि के पक्ष में ही अपना निर्णय देगा तथा दूसरे कवि की रचना में दोष ही दोष उसे दिखाई देंगें। इस तरह उसका निर्णय और मूल्यांकन पक्षपात पूर्ण होगा। अतः तुलनात्मक आलोचना करते समय आलोचक को अवश्य ध्यान रखना चाहिए अन्यथा आलोचना निष्पक्ष नहीं हो सकेगी।5

तुलनात्मक आलोचना के दोष

तुलनात्मक आलोचना पद्धति में सबसे बडा दोष यह है कि कोई भी आलोचक सही अर्थ में निष्पक्ष नहीं रह सकता, तटस्थ रहना अत्यंत कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक रुचि होती है और वह अपने मन और अपनी रुचि के अनुसार ही व्यवहार करता है। आलोचक चाहे कितनी भी कोशिश करे उसकी अभिरुचि तथा झुकाव प्रकट हो ही जाता है। इस का उदाहरण बिहारी और देव की रचनाओं की तुलनात्मक आलोचना में स्पष्ट दिखाई देता है। पद्म सिह ने बिहारी को श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया और मिश्र बन्धुओं ने देव के पक्ष में अपना मत दिया जबकि भगवान दीन ने पुनः बिहारी ही को श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया।

इस तुलनात्मक आलोचना का निश्चित मानदण्ड नहीं है। कभी तो शास्त्रीय नियमों के आधार पर तुलनात्मक आलोचना की जाती है तो कभी साम्य के आधार पर तुलना की जाती है। इस तरह इस पद्धति में एक रूपता का नितान्त अभाव है।6

भिन्न–भिन्न कालों की प्रवृत्तियां अलग अलग होने के कारण तथा परिस्थितियां भिन्न होने के कारण कवियों पर प्रभाव अवश्य पडता है, अतः उनकी परस्पर तुलना भी अवैज्ञानिक हो जाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तुलनात्मक आलोचना पद्धति निश्चय ही दो रचनाओं में साम्य–वैषम्य, गुण–दोष आदि का विवेचन कर वैज्ञानिक मूल्यांकन कर सकने में सक्षम है परन्तु इस पद्धति से आलोचना करते हुए आलोचक को ध्यान रखना चाहिए कि वह व्यक्ति वादी न हो तथा तटस्थ हो। यह पद्धति कवियों के मूलभूत विषयों और तथ्यों का उद्घाटन करने में समर्थ है। हिन्दी में इस पद्धति का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। पाश्चात्य आलोचना में यह पद्धति सर्वाधिक लोकप्रिय है।

सदर्भ सूचि

1. विश्वनाथ त्रिपाठी हिन्दी आलोचना पृ 65
2. मधुरेश हिन्दी आलोचना का विकास पृ87
3. डॉ अमर पाथ हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली पृ 35
4. नन्द किशोर नवल हिन्दी आलोचना का विकास पृ 78
5. बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द पृ 69
6. कालू राम परिहार हिन्दी आलोचना की परम्परा और रामविलास शर्मा पृ 46